भाषा हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं है, समाज की उपज है। यह शब्दों से बनती है, पर उसी पर खत्म नहीं होती है। यह मानवीय कलाकृति है जिसके बल पर उसने भव्य संस्कृति और उन्नत सभ्यता का विकास किया। भाषा ही वह माध्यम से है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए प्रारंभ में अनेक भौतिक एवं मूर्त्त संकेतों या प्रतीकों को अपनाया और उन्हें ही विचार विनिमय का साधन बनाया।

यों तो भाषा हम दो रूपों में ही स्पष्टतया व्यक्त करते हैं–लिखकर अथवा बोलकर, परन्तु, सांकेतिक भाषा का भी अपना महत्त्व हुआ करता है। यह सांकेतिक रूप कई रूपों में हमारे समाने आता हैं। ट्रैफिक चौराहों पर लाल और हरे रंगों द्वारा खास-खास बातें कही जाती है। सायरन की आवाज, भोंपू की आवाज, इसी तरह मवेशियों या पक्षियों को कुछ कहने या समझाने के लिए हम ध्वनि-संकेतों का प्रयोग करते हैं। आंगिक संकेतों के कारण ही भाषा में अंगों से संबंधित मुहावरों का प्रयोग दिखता है। एक ही संकेत विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न भावों को व्यक्त करते हैं। सांकेतिक भाषा भी भाषा व्यक्त करने का तरीका है। लेकिन, भाषा के लिखित और मौखिक रूपों का ज्यादा प्रयोग हो रहा है।

ध्वनि संकेतों या भावों को स्थाई रूप देने के लिए लिपि की खोज की गई। इसलिए प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। हिन्दी देवनागरी लिपि में तथा अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी जाती है। भाषा विचारों को व्यक्त करने वाली ध्वनि शब्दों तथा वाक्यों का एक समष्टिगत रूप है।

Scanned with CamScanner

भाषा मानव समाज की उन्नति तथा सफलता का मूलभूत आधार है। भाषा के अभाव में एक-दूसरे के विचारों का नहीं समझा जा सकता है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ अपने भाव व्यक्त करता है। भाषा तीन प्रकार की होती है–

1. कथित भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

भाषा मौखिक शब्द समूहों या वाक्यों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों का विनिमय करते हैं। प्रत्येक जाति के पशुओं की अपनी भाषा होती है। अधिक समय तक साथ रहने पर मनुष्य भी पशुओं की सांकेतिक भाषा समझने में समर्थ होता है। मनुष्य ने संकेतों की अपेक्षा ध्वनि संकेतों के माध्यम से भावों, विचारों तथा अनुभूतियों को व्यक्त करने का साधन अपनाया और यही साधन भाषा है।

(1) **क्रोचे** के अनुसार, "भाषा अभिव्यक्ति की दृष्टि से उच्चरित एवं सीमित ध्वनियों का संगठन है।"

(2) **स्वीट** के अनुसार, "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण भाषा है।"

(3) **एन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका** में भाषा की परिभाषा को स्पष्ट किया गया है, "भाषा यादृच्छिक, मौखिक प्रतीकों का व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य समाज एवं संस्कृतिक के सदस्य होने के नाते परस्पर विचारों अथवा कार्यों का आदान-प्रदान करते हैं।"

(4) **डॉ० रामचन्द्र वर्मा** के शब्दों में, "मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों व वाक्यांशों आदि का वह समूह जिसके द्वारा मन की बातें बतायी जाती है, भाषा कहलाती है।"

इस प्रकार, स्पष्ट हो जाता है कि भाषा ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है जिसके माध्यम से प्रयोक्ता एवं श्रोता आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यह आदान-प्रदान लिखित एवं मौखिक दोनों ही रूपों में होता है। भाषा उच्चारित भाषा और लिखित भाषा दोनों रूपों में प्रस्तुत होती है। उच्चारित भाषा को ही लिपिबद्ध रूप में संयोजा जा सकता है तथा समाज और संस्कृतिक के उन्नति हस्तान्तरण किया जाता रहा है और भविष्य में आनेवाली पीढ़ी के लिए विचारों को हस्तान्तरित किया जाता रहेगा।

भाषा की प्रकृति या विशेषताएँ (Nature or Characteristics of Language)—भाषा की प्रकृति या विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. भाषा अर्जित सम्पत्ति है—पैतृक नहीं, मानव-शिशु माँ के पेट से कोई भाषा सीखकर नहीं आता, बल्कि, जिन भाषा-भाषियों के बीच उसका जन्म होता है, उसका पालन-पोषण होता है और जो भाषा उसे सुनने को मिलती है वही भाषा सीख लेता है। यदि शिशु को मानव-समुदाय से अलग रखा जाए तो वह कोई भाषा नहीं सीख सकेगा।

2. भाषा अनुकरणजन्य प्रक्रिया है—अनुकरण द्वारा ही भाषा सीखते हैं और यह प्रक्रिया ही भाषा की परिवर्तनशीलता का या दूसरे शब्दों में विकासशीलता का एक प्रमुख कारक है। शिशु माता-पिता, भाई बहन आदि से भाषा का व्यवहार सुनकर स्वयं कहने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner